क्या अतीत में हम नरभक्षी थे?

डी. बालसुब्रमण्यन

क्या कभी ऐसा वक्त था जब इंसान इंसान का भक्षण करता था? यह तो सर्वज्ञात है कि इंसान जीव के लगभग हर रूप को हज़म कर जाता है; चाहे वह फफूंद हो, बैक्टीरिया, पौधे, कीट हों या जल, थल या नभ में रहने वाले जीव। फिर नरभक्षण में क्या कोई जैविक समस्या है या फिर कोई सांस्कृतिक अड़चन है? कई जानवर स्वजाति भक्षण करते हैं। कुछ अपने ही बच्चों को खा जाते हैं। 'पीपुल फॉर द इथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स' के अध्यक्ष एलेक्स पेचेको लिखते हैं कि उन्होंने भूखे कुत्तों को अपने ही पिल्लों को खाते देखा है। फ्रांस डी वॉल और डेसमंड मॉरिस ने अपनी पुस्तक 'चिम्पैंजी पॉलिटिक्स-पॉवर एण्ड सेक्स अमंग एप्स' में दावा किया है कि बड़े वानर भी स्वजाति भक्षी हैं लेकिन ऐसा कम ही होता है। क्या विकास ने हमें एक-दूसरे के भक्षण हेतु लैस किया है और हमारी संस्कृति इसे रोकती है?

स्वजाति भक्षण के ऐतिहासिक विवरण बहुत स्पष्ट व विश्वसनीय नहीं हैं। ऐसा इसलिए कि वे पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होते हैं। इसके अलावा उनमें अपने पंथ/सम्प्रदाय या देश की शेखी बघारने की भरपूर कोशिश होती है।

मसलन, कोलम्बस ने कैरेबिया में एक नरभक्षी जनजाति कैनिबा से सम्पर्क होने की बात कही है। नरभक्षी के लिए कैनिबल शब्द कैनिबा से ही बना है। यह स्पष्ट नहीं है कि कैनिबा सचमुच में अपने साथी इंसानों को खा लेते थे या यह मात्र पड़ोसी जनजाति द्वारा फैलाया गया दुष्प्रचार था। सच्चाई जो भी हो मगर पोप इनोसेंट-4 ने इसे एक पाप घोषित किया था। पोप के इस फतवे के परिणामस्वरूप रानी इसाबेला ने स्पेन के औपनिवेशकों को आदेश दिया कि वे नरभक्षी माने गए लोगों को कानूनन गुलाम बना लें। इससे एक तो उन्हें गुलाम बनाने का लाइसेंस मिल गया, दूसरे यह उनके आर्थिक हित में भी था। वे इस आशय के आरोप लगाते और फिर उस इलाके पर कब्ज़ा कर लेते।

स्वजाति भक्षण का निष्पक्ष और पूर्वाग्रह रहित इतिहास मिल पाना खासा मुश्किल मसला है। इतिहास में जब भी ऐसे कथन मिलते हैं कि इंसान को इंसानी मांस खाते देखा गया है तो साथ में यह स्पष्ट नहीं किया जाता है कि ऐसा भोजन के अभाव में हुआ था या फिर किसी सांस्कृतिक, धार्मिक, चिकित्सकीय रिवाज़ या प्रतीक के बतौर हुआ। लगता है कि उग्र तांत्रिक लोग ऐसे क्रियाकलाप करते हैं। वे धार्मिक अनुष्ठानों में खून और शरीर के दूसरे हिस्से काम में लेते हैं।

मध्य युरोप के चिकित्सा से जुड़े लोग मिरगी, पोरफाइरिया और गठिया में खून और इंसान के अंगों के उपयोग की अनुशंसा करते थे। पापुआ न्यू गिनी की नरभक्षी मानी जाने वाली जनजाति फोर शायद धार्मिक रिवाज़ के तहत ऐसा करती थी। नोबल पुरस्कार प्राप्त डॉ. कार्लिटोन गजडुसेक ने फोर जनजाति में मस्तिष्क के एक घातक रोग का अध्ययन किया था। उन्होंने वहां के अपने अनुभवों का विस्तार में वर्णन किया है। उन्होंने देखा कि मृत फोर व्यक्ति के परिवार के लोग और पड़ोसी धार्मिक रिवाज़ के तहत मृत व्यक्ति के मस्तिष्क को चबाते थे। उनका मानना था कि इससे मृत्यु के बाद का मृतक का जीवन सुरक्षित होगा। होता यह है कि किसी व्यवहार का एक संदर्भ में और विस्तार में अध्ययन न करने से हम किन्हीं ऐसे निष्कर्षों पर पहुंच जाते हैं जो हमारी बनी-बनाई धारणाओं की ही पुष्टि करते हैं। इससे हमें पता चलता है कि यह स्पष्ट नहीं है कि स्वजाति भक्षण का उक्त व्यवहार भूख से जन्मा था या इसके पीछे कोई धार्मिक कारण था। खैर, मैं तो धार्मिक कारणों को ही मानना चाहूंगा, चाहे इसके लिए मुझे अड़ियल ही क्यों न